एम.एच.डी.-24

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2021

एम.एच.डी.-24 : मध्यकालीन कविता – 2

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : ***प्रथम*** *प्रश्न* ***अनिवार्य*** *है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं ***दो*** की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *2×10=20*

(क) जो रहीम ओछो बढ़ै, तौ अति ही इतराय ।
प्यादे सों फरजी भयो, टेढ़ों-टेढ़ों जाय ।।

(ख) उद भया है जलद तू, जग को जीवन-दान ।
मेरो जीवन हरतु है, कौन बैर मन मान ।।

(ग) आपने आपने ठौरनि तो भुवपाल सबै भुव पालै सदाई ।
केवल नामहिं के भुवपाल कहावत हैं भुव पालि न जाई ।
भूपन की तुम ही धरि देह विदेहन में कल कीरति गाई ।
केशव भूषण की भुवि भूषण भू-तन ते तनया उपजाई ।।

(घ) राई लोन वारति, गुराई देखि अंगन की,
दुरै न दुराईयै भुराइ सो भिरति है ।
ज्यों ज्यों सुघराई सों न उधरन देति
त्यों त्यों सुंदरि सुघर, घर घेरी न घिरति है ।।
निठुर डिठौना दीने नीठि निकसन कहै,
डीठि लागिबे को डर पीठि दै गिरति है ।
जिन जिन ओर, चित चोर चितवति,
त्योंही तिन तिन ओर, तिन तोरति फिरति है ।।

2. नीतिकाव्य का अर्थ एवं स्वरूप स्पष्ट करते हुए भक्तिकालीन नीति साहित्य का परिचय दीजिए । *10*

3. केशवदास की कविता के कलापक्ष के वैशिष्ट्य का विवेचन कीजिए । *10*

4. मतिराम के शृंगार वर्णन की विशेषताएँ बताइए । *10*

5. देव की कविता के अभिव्यंजना पक्ष का सोदाहरण विवेचन कीजिए । *10*

6. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×5=10*

(क) रसिक प्रिया

(ख) परवर्ती कवियों पर रहीम का प्रभाव

(ग) शुक्लयुगीन आलोचना और देव

(घ) मतिराम की कविता में छंद